

नमोनिया एवं डायरिया प्रगति रिपोर्ट

प्रलिस के लयः

नमोनया तथा डायरया प्रगरेस रपौरट

मेन्स के लयः

नमोनया तथा डायरया उनमूलन में नहलत सडसुयाँ

चरुा में कुयों?

हल ही में 'इंटरनेशनल वैकुसीन एकुसेस सेंटर' (International Vaccine Access Centre) दुवारा जारी 'नमोनया एवं डायरया प्रगतररपौरट' के अनुसलर, डारत ने नमोनया और डायरया के कारण डकुऑों की डृतु के डडलुओं की रोकथलड हेतु अडने टीकलकरण कुवरेज में डहततुवडूरण प्रगतरकी है ।

प्रडुख डदुः

- रपौरट के अनुसलर, वरतडडन में COVID-19 के कारण वशुव डर में सुवलसुथु कुषुतुर डर अतरररकुत दुडलव के डलवडुड डारत इस रपौरट में शलडल 5 में से 3 वैकुसीन के वैशुवकी लकुषु कु 90% तक डुरल करने में सडल रहल है ।
- गौरतलड है कु इस रपौरट में डडुथीरया, कलली कुलसी और टटुनेस (डीपीटी) वैकुसीन, कुसरल-नरुतुरण-वैकुसीन की डहली कुरलक, हीडुडलसलस इनुडुलुएंगुल टलडु डी, नुडुडुकुकल कंगुगेट वैकुसीन (डीसीवी) और रोटलवलरस वैकुसीन कु शलडल कया डलतल है ।
- इस रपौरट के अनुसलर, डारत में रोटलवलरस वैकुसीन के कुवरेज में 18% की वृदुध और नुडुडुकुकल नमोनया के कुलललड वैकुसीन कुवरेज में 9% की वृदुध दुखने कु डलली है ।
- गौरतलड है कु डुरतुडेक वरु 12 नडंडर कु 'वशुव नमोनया दुवलस' डनलडल डलतल है ।

नमोनया एवं डायरया प्रगतररपौरटः

- नमोनया तथा डायरया प्रगतररपौरट कु 'डुऑन हुऑकसल डुलुडडरुग सुकुल ऑडर डडुलकु हेल्थ' (Johns Hopkins Bloomberg School of Public Health) की संसुथल इंटरनेशनल वैकुसीन एकुसेस सेंटर (International Vaccine Access Center- IVAC) दुवारा वलरुषकी रूड से डुरकलशतल कया डलतल है ।

सरकलर के डुरडलसः

- 100 डे एगुंडलः वरु 2019 में डारत ने रोटलवलरस वैकुसीन से संबुधतल रलषुटुरीड सुतर डर कुललए गडे अडडुडलन कु डुरल कया । वैकुसीन की डहुँकु में वसुतलर के कुलते डुरतुवुरुष डनुड लेने वलले 26 डललडुन डकुऑों कु रोटलवलरस डायरया के कुतरे से डुकलने में सलडलतल डुरलडुत हुगुी ।
 - गौरतलड है कु अगसुत 2019 में केंदुरीड सुवलसुथु और डरवलर कलुडलण डनुतुरी ने सरकलर के 100 दुनल के एगुंडे के तहत देश के सडुी रलकुडुओं और केंदुरशलसतल डुरदेशुओं में डकुऑों के लडु रोटलवलरस वैकुसीन उडलडुध करलने की डलत कही थुी ।
- इस रपौरट में 10 संकुतेकुओं डर नमोनया और डायरया से हुने वलली डुतुओं कु रोकने के लडु सरकलरुओं के डुरडलस कल डुलुडुलंकन कया गडल, इनु संकुतेकुओं में सुतनडलन, टीकलकरण, एंटीडलडुऑकु, ओआरएस (Oral Rehydration Solution-ORS), डकु सडुलीडुेंट आदु शलडलल हैं ।
- इस रपौरट में शलडलल 15 देशुओं में सरुडु 4 देश (डारत सहतल) ही ऐसे थे, कु अननुड सुतनडलन (58%) के लकुषु कु डुरलडुत करने में सडल रहे ।
- हललुऑु इस रपौरट में शलडलल लगडुग सडुी देश नमोनया और डायरया कल उडुऑलर सुनुशुकुतल करलने की दुशलल में डकुडुडुते दुखलई दुडु, डडकल डारत उडुऑलर के सडुी ऑलर लकुषुडुओं कु डुरलडुत करने में असडल रहल ।

कलरणः

- रपौरट के अनुसलर, वरु 2019 के दुरलन डारत में डहततुवडूरण प्रगतरदुखने कु डलली थुी, डरनुतु COVID-19 डहलडलरुी के कारण सुवलसुथु कुषुतुर डर

बढ़ रहे दबाव के कारण टीकाकरण और चिकित्सीय ऑक्सीजन की पहुँच प्रभावित हुई है।

चुनौतियाँ:

- भारत को किसी भी अन्य देश की तुलना में पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में नमोनिया और डायरिया से होने वाली मौतों का अधिक भार सहना पड़ता है।
- एक अनुमान के अनुसार, भारत में नमोनिया और डायरिया के कारण प्रतिवर्ष पाँच वर्ष से कम आयु के लगभग 2,33,240 बच्चों की मृत्यु हो जाती है।
- रपिर्ट के अनुसार, भारत में डायरिया के उपचार की कवरेज सबसे कम रही, इसके साथ ही मात्र 51% बच्चों को ओआरएस और 20% बच्चों को ही जकि सप्लीमेंट उपलब्ध हो पाता है।
 - रपिर्ट के अनुसार, जकि और ओआरएस को एक साथ देने पर यह डायरिया से होने वाली मौतों को कम करने में काफी प्रभावी सिद्ध होता है।
- IVAC के एक वरषिठ सलाहकार के अनुसार, नमोनिया और डायरिया के कारण प्रतिवर्ष होने वाली मौतों को टीके और सरल सिद्ध उपचारों के माध्यम से रोका जा सकता है जो हमारे पास पहले से ही उपलब्ध हैं, ऐसे में COVID-19 महामारी के उपचार की खोज के बीच इन बीमारियों से निपटने के प्रयासों से ध्यान नहीं हटाया जाना चाहिये।

COVID-19 वैक्सीन और भारत:

- हाल में बहुराष्ट्रीय दवा निर्माता कंपनी फाईज़र के साथ अमेरिकी कंपनी मॉडर्ना ने COVID-19 के लिये अपनी-अपनी वैक्सीन के 90% से अधिक प्रभावी होने की घोषणा की है, जबकि बहुत से अन्य वैक्सीन के परीक्षण अपने अंतिम चरण में हैं।
- इन परिणामों के बाद विश्व में इस महामारी से लड़ने की एक नई उम्मीद जगी है, हालाँकि भारत में सीरम इंस्टीट्यूट या भारत बायोटेक द्वारा विकसित वैक्सीन के तीसरे चरण के परीक्षण अभी व्यापक रूप से नहीं संचालित हुए हैं।
- सरकार द्वारा फाईज़र वैक्सीन की कुछ खुराक प्राप्त करने के संदर्भ में उसके प्रतिनिधियों से भी बातचीत की जा रही है।
- हालाँकि इस वैक्सीन को लगभग -70 °C तापमान पर रखा जाना अनिवार्य बताया गया है, ऐसे में इस क्षेत्र में बुनियादी ढाँचे का अभाव भारत के लिये एक चुनौती बन सकता है।
- इस वैक्सीन की सफलता से वैज्ञानिकों द्वारा कोरोना वायरस के स्पाइक प्रोटीन को लक्षित करने की रणनीति सिद्ध हुई है। गौरतलब है कि अधिकांश वैक्सीन निर्माताओं द्वारा इसी पद्धति का उपयोग किया जा रहा है ऐसे में भविष्य में वैक्सीन के विकास में कई अन्य सकारात्मक परिणामों की संभावनाएँ मज़बूत हुई हैं।
- साथ ही यह भी संभव है कि इस प्रकार की तकनीक भविष्य में अन्य बीमारियों के लिये वैक्सीन निर्माण में सहायक हो सकती है।

आगे की राह:

- भारत को ऐसी तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्थानीय स्तर पर इन क्षेत्रों में विशेषज्ञता विकसित करने का प्रयास करना चाहिये।
- साथ ही भारत को अपनी कोल्ड चेन अवसंरचना को मज़बूत करने पर विशेष ध्यान देना होगा, जो वर्तमान में साधारण वैक्सीन के लिये ही उपयुक्त है।

स्रोत: द हट्टू